डॉ. सुशील अग्रवाल

जानें काकिणी से गन्तव्य स्थान का शुभाशुभ

आधुनिक युग में शिक्षा, नौकरी या आजीविका के लिए किसी अन्य शहर, राज्य या देश जाना एक साधारण सी बात हो गई है। अनेक स्थितियों में तो जातक के पास विकल्प भी होता है कि वह नवीन स्थान पर जाए या न जाए, या फिर 2–3 विकल्पों में से किसी एक को चुने।

इन परिस्थितियों में जातक सोच में पड़ जाता है कि उसकी उन्नति और समृद्धि के लिए कौन सा स्थान सर्वश्रेष्ठ रहेगा। संहिता स्कन्ध के मुहूर्त विषय के अंतर्गत वास्तु प्रकरण में राशि और काकिणी पद्धति वर्णित हैं जिनसे जातक का मार्गदर्शन किया जाता है।

काकिणी

काकिणी शब्द कक् + णिनि से निर्मित हुआ है और यह मुद्रा का एक मान था जिसे कौड़ी कहते थे। अर्थात यह विनिमय से सम्बन्धित है।

नाम के आधार पर राशि

पंचांगों में अवकहडा सारणी होती है जिसमें जन्म–नक्षत्र–चरण के आधार नाम अक्षर दिये गए होते हैं। हर नक्षत्र चरण का एक अक्षर (वर्ग) और प्रत्येक राशि के 9 अक्षर होते हैं, जैसे– मेष राशि में अश्विनी (4 चरण : चू, चे, चो, ला), भरणी (4 चरण : ली, लू, ले, लो) और कृतिका (1 चरण : अ)।

कृपया ध्यान दें कि वास्तुशास्त्र में राशि के ज्ञान का एक विशिष्ट नियम है :

अश्विन्यादित्रयं मेषे सिंहे प्रोक्तं मघात्रयम्।

राशि	जन्म का नक्षत्र	नाम का पहला अक्षर
मेष	अश्विनी (4 चरण), भरणी (4 चरण), कृतिका (4 चरण)	चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ, ई, ऊ, ए
वृष	रोहिणी (4 चरण), मृगशिरा (4 चरण)	ओ, वा, व, वू, वे, वो, का, की
मिथुन	आर्द्रा (4 चरण), पुनर्वसु (4 चरण)	कू, घ, ङ, छ, के, को, ह, ही
कर्क	पुष्य (4 चरण), अश्लेषा (4 चरण)	हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो
सिंह	मघा (4 चरण), पूर्व फाल्गुनी (4 चरण), उत्तर फाल्गुनी (4 चरण)	मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे, टो, पा, पी
कन्या	हस्त (4 चरण), चित्रा (4 चरण)	पू, ष, ण, ठ, पे, पो, रा, री
तुला	स्वाति (4 चरण), विशाखा (4 चरण)	रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते, तो
वृश्चिक	अनुराधा (4 चरण), ज्येष्ठा (4 चरण)	ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू
धनु	मूल (4 चरण), पूर्व आषाढ़ा (4 चरण), उत्तर आषाढ़ा (4 चरण)	ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे, भो, जा, जी
मकर	श्रवण (4 चरण), घनिष्ठा (4 चरण)	खी, खू, खे, खो, गा, गी, गू, गे
कुंभ	शतभिषा (4 चरण), पूर्व भाद्रपद (4 चरण)	गो, सा, सी, सू, से, सो, दा, दी
मीन	उत्तर भाद्रपद (4 चरण), रेवती (4 चरण)	दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

मूलादित्रितयं चापे शेषेषु नवराशयः।।

अर्थात अश्विनी आदि तीन नक्षत्र मेष राशि के, मघा आदि तीन नक्षत्र सिंह राशि के और मूल आदि तीन नक्षत्र धनु राशि के हैं। अन्य नौ राशियों के दो–दो नक्षत्र हैं। वास्तुशास्त्र में नक्षत्र के चरण भेद से राशि नहीं मानी है। कृपया पुनः ध्यान दें कि निम्न राशि सारणी वास्तु के आधार पर है जो पंचांगों के अवकहडा चक्र से कुछ भिन्न है।

उपरोक्त सारणी से राशि ज्ञात करते समय निम्न नियमों का भी ध्यान रखें :

- उपरोक्त सारणी से राशि ज्ञात करते समय बड़ी और छोटी मात्रा का अंतर नहीं देखा जाता।
- यदि नाम का प्रथम अक्षर एक संयुक्त अक्षर है तो सबसे पहले उच्चारण करने वाले अक्षर को लेना चाहिए। उदाहरण : क्ष= ष्+अ (क लेंगे), त्र=त्+र्+अ (त लेंगे), ज्ञ= ज्+ञ् (ज लेंगे) आदि।

नाम

हिन्दू परम्परा में जातक का नामकरण जन्म नक्षत्र पर आधारित अक्षर से होता है, परन्तु आजकल बिना जन्म नक्षत्र ज्ञान के भी नाम रखा जाने लगा है। नाम किसी भी आधार पर रखा गया हो, परन्तु हमें वह नाम लेना है जिससे जातक जाना जाता हो। जातक जिस नाम से जाना जाता है उसे 'प्रसिद्ध नाम' कहा जाएगा। उदाहरण– मेरा जन्म मृगशिरा के चौथे नक्षत्र में हुआ और पण्डित जी ने 'की' अक्षर से नाम रखने के लिए कहा, परन्तु मेरे माता–पिता ने मेरा नाम 'सुशील' रखा। 'की' के आधार पर राशि होती 'वृषभ', परन्तु 'सुशील' प्रसिद्ध नाम होने के कारण कुम्भ राशि को यहां ग्रहण करना है।

देश–राज्य–नगर का नाम :

जातक एक देश से दूसरे देश, एक राज्य से दूसरे राज्य और एक शहर से दूसरे शहर जाने से सम्बन्धित प्रश्न कर सकता है :

- **एक देश से दूसरे देश** : इस स्थिति में देश के नाम से देश की राशि ज्ञात करें।
- **एक राज्य से दूसरे राज्य** : इस स्थिति में राज्य के नाम से राज्य की राशि ज्ञात करें।
- **एक शहर से दूसरे शहर** : इस स्थिति में शहर के नाम से शहर की राशि ज्ञात करें।

अक्षरों के वर्ग : जातक एक देश से दूसरे देश, एक राज्य से दूसरे राज्य और एक शहर से दूसरे शहर जाने से सम्बन्धित प्रश्न कर सकता है।

संख्या	स्वर/व्यंजन	टिप्पणी
1.	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, अं, अः, ऋ 'अ' वर्ग	(सभी स्वर)
2.	क, ख, ग, घ, ड़	'क' वर्ग
3.	च, छ, ज, झ, ञ	'च' वर्ग
4.	ट, ठ, ड, ढ, ण	'ट' वर्ग
5.	त, थ, द, ध, न	'त' वर्ग
6.	प, फ, ब, भ, म	'प' वर्ग
7.	य, र, ल, व	'य' वर्ग
8.	श, ष, स, ह	'श' वर्ग

जिस देश, राज्य या शहर में जातक जाना चाहता है, वह उसके लिए शुभ होगा या नहीं? इसकी विधि का उल्लेख रामदैवज्ञ विरचित मुहूर्त चिंतामणि के वास्तु प्रकरण अध्याय में किया गया है :

यद्भं द्वयङ्कसुतेशदिङ्मितमसौ ग्राम : शुभो नामभात्
स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढयं गजैः शेषितम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद्विपरतो यस्याधिकाः सोऽर्थदः।

(कृपया नोट करें कि श्लोक की अन्तिम पंक्ति नहीं दी जा रही है क्योंकि वह लेख–विषय से सम्बन्धित नहीं है।)

भावार्थ : जातक के प्रसिद्ध नाम की राशि से गाँव के नाम की राशि दूसरी, नवीं, पाँचवी, ग्याहरवीं या दशवीं हो तो वह गाँव जातक के लिए शुभ फलदायक होता है। जातक के नाम का पहला अक्षर आठों में से जिस वर्ग का हो उस वर्ग की संख्या को द्विगुणित करके उसमें परवर्ग (गाँव के वर्ग) की संख्या को जोड़ें। फिर इसी प्रकार परवर्ग की संख्या को द्विगुणित करके उसमें जातक के वर्ग की संख्या को जोड़ें। इन दोनों संख्याओं को अलग–अलग 8 से भाग, देकर जो शेषफल हो वह क्रमशः जातक (स्ववर्ग) की और परवर्ग की काकिणी होती है। जिसकी संख्या अधिक हो, वह उसके लिए लाभदायक होता है।

इस महत्त्वपूर्ण श्लोक को निम्न दो भागों में बांटकर सोदाहरण समझते हैं।

राशि के आधार पर

इस विधि से जातक के देश, राज्य या शहर की अनुकूलता–प्रतिकूलता निम्न चरणों से निकालें :

1) जातक के प्रसिद्ध नाम से उसकी राशि निकालें।

2) जिस देश, राज्य या शहर के बारे में जातक ने पूछा है, उसकी राशि भी निकाल लें।

3) अब उसके नाम की राशि से निम्न देखें :

- यदि जातक के नाम की राशि से

देश, राज्य व शहर की राशि से 2 री, 5 वीं, 9 वीं, 10 वीं या 11वीं है तो जातक के लिए उत्तम है, अन्यथा अशुभ।

उदाहरण

जातक का नाम सुशील है जिसका स्थानांतरण हो रहा है और उसके पास दिल्ली और ग्वालियर के दो विकल्प हैं। वह ज्योतिषी से पूछता है कि उसके लिए दोनों में से कौन सा शहर उसकी समृद्धि और प्रगति के लिए सही रहेगा?

सुशील–दिल्ली

1) 'सुशील' की राशि (उपरोक्त सारणी से) कुम्भ है।

2) 'दिल्ली' की राशि (उपरोक्त सारणी से) मीन है।

3) कुम्भ से मीन दूसरी राशि है, जो उपरोक्त नियम के अनुसार उत्तम है।

सुशील–ग्वालियर

4) 'सुशील' की राशि (उपरोक्त सारणी से) कुम्भ है।

5) 'ग्वालियर' की (उपरोक्त सारणी से) मकर है।

6) कुम्भ से मकर 12 वीं है जो उपरोक्त नियम के अनुसार अशुभ है।

निष्कर्षतः जातक के लिए दिल्ली जाना उत्तम और ग्वालियर जाना अशुभ सिद्ध होगा।

काकिणी के आधार पर

इस विधि में निम्न चरण हैं :

1) स्ववर्ग (जातक के नाम) की उपरोक्त वर्ग सारणी से संख्या ज्ञात करें।

– सुशील का प्रथम अक्षर 'स' 'श' वर्ग में आता है, जिसकी संख्या 8 हैं।

2) परवर्ग (गन्तव्य स्थान) की उपरोक्त वर्ग सारणी से संख्या ज्ञात करें।

– दिल्ली का 'द', 'त' वर्ग में आता है, जिसकी संख्या 5 हैं।

– ग्वालियर का 'ग', 'क' वर्ग में आता है, जिसकी संख्या 2 है।

स्ववर्ग काकिणी की गणना करें :

(स्ववर्ग संख्या x 2)+(परवर्ग संख्या) / 8 जो भी शेषफल होगा वह स्ववर्ग काकिणी होगी। शेषफल यदि 0 हो तो उसे 8 मानना चाहिए।

4) परवर्ग काकिणी की गणना करें :

((परवर्ग संख्या x 2)+(स्ववर्ग संख्या) / 8 जो भी शेषफल होगा वह परवर्ग काकिणी होगी। शेषफल यदि 0 हो तो उसे 8 मानना चाहिए।

5) श्लोक की तीसरी पंक्ति में **"अन्योः च तद् विवरतो....सोऽर्थदः"** से स्पष्ट है कि यदि स्ववर्ग की काकिणी संख्या यदि परवर्ग से अधिक है, तो जातक के लिए लाभदायक होता है।

इस आधार पर उपरोक्त उदाहरण का आकलन करते हैं :

सुशील–दिल्ली

1) सुशील (जातक) की वर्ग संख्या 8 है।

2) दिल्ली (गन्तव्य स्थान) की वर्ग संख्या 5 है।

3) स्ववर्ग काकिणी =

((8 x 2)+ 5) / 8

स्ववर्ग काकिणी = 5 (शेषफल)।

4) परवर्ग काकिणी

((5 x 2)+8) / 8

परवर्ग काकिणी = 2 (शेषफल)।

5) स्ववर्ग की काकिणी संख्या 5 परवर्ग की काकिणी संख्या 2 से अधिक है। अतः जातक की काकिणी संख्या दिल्ली की काकिणी संख्या से अधिक होने से जातक के लिए दिल्ली जाना लाभदायक सिद्ध होगा।

सुशील–ग्वालियर

1) सुशील (जातक) की वर्ग संख्या 8 है।

2) ग्वालियर (गन्तव्य स्थान) की वर्ग संख्या 2 है।

3) स्ववर्ग काकिणी =

((8 x 2)+2)+ / 8

स्ववर्ग काकिणी = 2 (शेषफल)।

4) परवर्ग काकिणी

((2 x 2)+ 8) / 8

परवर्ग काकिणी = 4 (शेषफल)।

5) स्ववर्ग की काकिणी संख्या 2 परवर्ग की काकिणी संख्या 4 से कम है। अतः ग्वालियर की काकिणी संख्या अधिक होने से ग्वालियर के लिए लाभदायक, परन्तु जातक के लिए हानिकारक है।

निष्कर्षतः इस विधि से भी जातक के लिए दिल्ली जाना ही लाभदायक और ग्वालियर जाना हानिकारक है।

इस लेख में वर्णित देश–राज्य–शहर का शुभाशुभ जानने से पूर्व यह भी अवश्य देखना चाहिए कि वह देश, राज्य या शहर वास्तु शास्त्र के अनुरूप है या नहीं– जैसे वहाँ की देव मंदिरों की स्थिति, जलाशय आदि की व्यवस्था, भूमि की उपयुक्ता आदि। ❐

पता : बी– 301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, द्वारका, नयी दिल्ली
मो. 9810162371